6/2/20

पु० वादी उप० नहीं। अधि० प्रतिवादी उप०।
वादी व उसके अधि० को बार 2 आवाजें लगवाई
गई लेकिन उप० नहीं तो वाद वादी अदम हाजरी
अदम पैरवी में खारिज किया जाता है। पत्रावली
बैनतीजा शुमार होकर दर्ज रजिस्टर हो कर दाखिल दफ्तर
हो। इजलास में सुनाया गया।